S-554 Roll No. ……..

BASL–302

वेद एवं उपनिषद

कला में स्नातक (बीए–12 / 16 / 17)

तृतीय वर्ष, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद्देवेषु गच्छति॥

(ख) यो हत्वाहिमरितात्सप्त सिन्धून
यो गा उदाजदपधा बलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान
संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः॥

(ग) प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमगेण्व-
धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

(घ) अन्ये जायां परि भृशन्त्यस्य यस्या-
गृधद्वेदने वाज्याक्षः।
पिता माता भातर एनमाहुर्न
जानीमो नयता बद्धमेतम्॥

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ हिन्दी व्याख्या कीजिए—

(क) आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सूनृतां
चेष्टापूर्वे पुत्रपशूंश्च सर्वान्।
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो
यस्मानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे॥

(ख) येयं प्रेमे विचिकित्सा मनुष्ये-
ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं
वराणामेष वरस्तृतीयः॥

(ग) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत-
स्तौ सपरीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

(घ) आत्मानं रथिनं विद्धि
शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि
मनः प्रग्रहमेव च॥

3. विष्णु देवता का परिचय दीजिए।
4. कठोपनिषद् का प्रतिपाद्य बताइए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. ऋग्वेद का परिचय देते हुए उसकी शाखाओं पर प्रकाश डालिए।
2. यजुर्वेद की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. ब्राह्मण ग्रन्थों पर प्रकाश डालिए।
4. वेदांगों पर प्रकाश डालिए।
5. अक्ष सूक्त का महत्व बताइये।
6. रथरूपक पर प्रकाश डालिए।
7. निम्नलिखित का अनुवाद कीजिए—
अग्निमीले पुरोहितम्
यशस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥
8. आत्मा के स्वरूप को बताइए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अग्नि सूक्त के ऋषि हैं—
   (अ) गृत्समद
   (ब) नारायण
   (स) मधुच्छन्दा
   (द) प्रजापति

2. अग्निसूक्त में कुल मन्त्र हैं—
   (अ) 10
   (ब) 9
   (स) 11
   (द) 8

3. तीन पादन्यास करने वाला देवता है—
   (अ) इन्द्र
   (ब) विष्णु
   (स) अक्ष
   (द) पुरुष

4. नचिकेता-यम संवाद है—
   (अ) मुण्डकोपनिषद् में

(ब) कठोपनिषद् में

(स) केनोपनिषद् में

(द) माण्डूक्योषनिषद् में

5. वेद का हाथ है—

(अ) शिक्षा

(ब) व्याकरण

(स) निरुक्त

(द) कल्प

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सत्य या असत्य लिखकर दीजिए—

6. ऋग्वेद की शाकल संहिता उपलब्ध है। (सत्य/असत्य)

7. यज्ञों का वेद सामवेद है। (सत्य/असत्य)

8. उपनिषद् अध्यात्मविद्या के प्रतिपादक नहीं हैं। (सत्य/असत्य)

9. शिवसंकल्प सूक्त का देवता मन है। (सत्य/असत्य)

10. श्रेय-प्रेय का वर्णन कठोपनिषद् में है। (सत्य/असत्य)